Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
February 2024 5(2), 1498–1502

STUDY OF THE EFFECT OF STUDENT TEACHERS' CLASS ATTENDANCE ON THEIR TEACHING SKILLS

छात्राध्यापकों के कक्षा में उपस्थिति का उनके शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

Madhuri Verma [1], Sanjit Kumar Tiwari [2]

[1] Researcher School of Education, Faculty of Education, Mats University Raipur, Raipur (CG), India
[2] Professor, School of Education, Faculty of Education, Mats University Raipur, Raipur (CG), India

Corresponding Author
Madhuri Verma,
mverma088188@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i2.2024.6356

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: The art of learning and teaching is called teaching. To advance this art, the teacher or the in-charge teacher uses various means. They are called teaching skills. The famous psychologist of teaching skills, Vikram Shyam in his famous book and Chhabmatz have considered the number of teaching skills as 7. Teaching skills play a major role in the teaching-learning process. In the said research work, the effect of student teachers' presence in the class on their teaching skills has been studied. As a result of which it can be said that 'student teachers' presence in the class will have an effect on their teaching skills. The main reason for this is the availability of online teaching platform along with offline teaching for student teachers. Due to this reason, the effectiveness of presence in the class on the development of teaching skills in student teachers has increased.

Hindi: सीखने और सीखाने की कला षिक्षण कहलाती है। इस कला को आगे बढ़ाने के लिए अध्यापक या प्रभारी अध्यापक के मध्यमो का प्रयोग करते है। उन्हें षिक्षण कौषल कहा जाता है। षिक्षण कौशल के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक वीकष्यामी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में और NCERT ने षिक्षक कौषलों की संख्या 7 मानी है। षिक्षण अधिगम प्रक्रिया में षिक्षण कौषल की मुख्य भूमिका है। उक्त शोध कार्य में छात्राध्यापकों के कक्षा में उपस्थिति का उनके शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। जिसके परिणाम स्वरूप कहा जा सकता है कि ''छात्राध्यापकों के कक्षा में उपस्थिति का उनके षिक्षण कौषल पर प्रभाव पाया जाएगा। जिसका मुख्य कारण छात्राध्यापकों के लिए आफलाईन षिक्षण के साथ-साथ आनलाईन षिक्षण प्लेटॉर्म की उपलब्धता है। इसी कारण छात्राध्यापकों में षिक्षण कौषल के विकास पर कक्षा-कक्ष में उपस्थिति की प्रभावषीलता बढ़ गयी है।

Keywords: Student Teacher, Student Teacher Presence, Teaching Skill, छात्राध्यापक, छात्राध्यापक उपस्थिति, षिक्षण कौषल

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

छात्राध्यापक को पढ़ाए जा रहे विषयों और विषयों की सामग्री का ज्ञान और समझ होना चाहिए, साथ ही कक्षा का प्रबंधन करने, स्पष्ट रूप से समझाने, बुद्धिमान और उचित प्रश्न पूछने और सीखने की कला और मूल्यांकन करने की क्षमता होनी चाहिए। शिक्षको को े कौशल समझ, कल्पना के साथ संयोजित करने की आवश्यकता है ताकि जो अभ्यास किया गया है उससे आगे बढ़ सके।

एक शिक्षक को विभिन कौशलों और विषय वस्तु का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, साथ हि छात्रों के किसी विशेष आयु या स्तर पर इसको कितनी आवश्यकता है, शिक्षण रणनीतियों को बच्चों को स्वतंत्र रूप से समूह में सीखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

शिक्षा मनुष्य के विकास का मूल साधन है। इसी शिक्षा के द्वारा मानव अपनी जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन ला सकता है। वस्तुतः शिक्षा अपने परिष्कृत एवं शुद्ध रूप से मानव को विवेकशील बनाती है। शिक्षा मानव को एक अच्छा इंसान बनाती है शिक्षा में उचित आचरण और तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या शक्ति आदि समाविष्ट है। इस प्रकार यह कौशलों व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक, नैतिक, और सौन्दर्य विषय के उत्कर्ष पर केन्द्रित है।

शिक्षा का सार्वभौमिक उद्देश्य है नैतिकता का विकास प्राचीन व मध्ययुगीन भारत में धर्म संस्कृति व शिक्षा परस्पर एक दूसरे के पर्याय रहे हैं। अतः इस सार्वभौमिक उद्देश्य की प्राप्ति होती रही है प्राचीन भारत में शिक्षा द्वारा इस बात पर जोर दिया गया कि धर्म का तात्पर्य कर्तव्य या आचरण से है। अतः धर्म प्रधान शिक्षा से व्यक्तियों में सहज त्याग मृत्यु उत्पन्न होती थी जो नैतिकता का सबल आधार था प्रत्येक समाज में कुछ नियम तथा आदर्श होते हैं। जिनका पालन करना समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक माना जाता है यह नियम तथा आदर्श ही नैतिक मूल्य कहलाते हैं। नैतिक मूल्य व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है इनमें से एक महत्वपूर्ण पक्ष है। सृजनात्मक प्रस्तुत शोध में बी.एड. महाविद्यालयों की छात्राध्यापकों के नैतिक मूल्यों का सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन किया गया क्योंकि छात्र अध्यापक राष्ट्र निर्माता है तथा नैतिकता समय वह स्थिति की आदर्श उपज होती है जिसका पालन समाज करता है। शिक्षा समाज की आईना होती है जिसमें प्रत्येक सृजनशील विचार वाले व्यक्ति अपनी स्थिति को ज्ञात कर सकता है तथा उत्कृष्ट राष्ट्र का पोषक बन सकता है।

समस्या कथन:

‘‘ छात्राध्यापकों के कक्षा में उपस्थिति का उनके शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन ‘‘

अध्ययन के उद्देष्य

छात्राध्यापकों के कक्षा में उपस्थिति का उनके शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

अध्ययन की परिकल्पना:

भ्01- छात्राध्यापकों के कक्षा में उपस्थिति का उनके शिक्षण कौशल पर सार्थक प्रभाव नही पाया जाएगा।

अध्ययन का परीसीमन:

अध्ययन के परिसीमन से तात्पर्य षोध समस्या का क्षेत्र को कुछ सीमाओं में सीमित करने में है। शोध पत्र की समय सीमा, उपलब्ध साधन एवं सुविधाओं को ध्यान में रखते हुये प्रस्तुत अध्ययन को निम्न लिखित आधार पर परिसीमित किया गया है ।

क्षेत्र परिसीमन:

प्रस्तुत अध्ययन छ.ग. राज्य के रायपुर जिले तक सीमित है ।

स्तर परिसीमन:

प्रस्तुत अध्ययन शासकीय एवं अषासकीय विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं तक सीमित है ।

1) अध्ययन हेतु रायपुर जिले के प्रशिक्षणार्थी शिक्षको का चयन किया जाएगा।
2) डी.एड. के प्रशिक्षणार्थी का चयन किया जाएगा।
3) बी.एड. के प्रशिक्षणार्थी का चयन किया जाएगा।

2. शोध विधि

प्रस्तुत शोध के लिए आंकडों को एकत्र करनें के लिए वर्णत्मक सर्वेक्षण विद्यि का प्रयोग किया गया है, क्योंकि उसके प्रतिदर्श पूरें समष्टि में बिखरे हुए हैं, इसके अलावा इस विधि के निम्न गुण भी इसके चयन को आधार प्रदान करतें है।

अध्ययन के चर

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा चरों का निर्धारण निम्नलिखित रूप से किया गया है ।

स्वतंन्त्र चर - छात्र अध्यापकों की उपस्थिति / अनुपस्थिति

आश्रित चर - षिक्षण कौषल

सह चरित चर– लिंग
- बालक
- बालिका

3. समग्र (जनसंख्या)-

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले के 10 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के छात्राध्यापकों का नैतिक मूल्य व शिक्षण कौशल का अध्ययन किया गया है। के विद्यार्थियों को समग्र जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

न्यादर्ष -

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले के 10 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के 200 छात्राध्यापकों को लिया गया है।

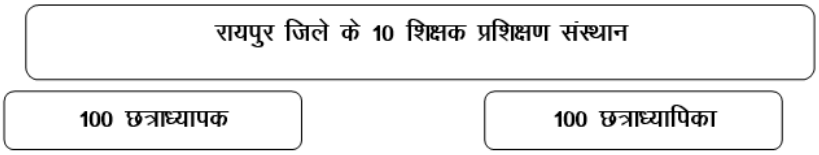

उपरोक्त शोध में शोधार्थी द्वारा न्यादर्ष का चयन 10 षिक्षा महाविद्यालयों में किया गया प्रत्येक षिक्षा महाविद्यालय से 10 बालक एवं 10 बालिकाओं का चयन किया गया अर्थात कुल 100 बालक एवं 100 बालिकाओं का चयन किया गया है।

4. अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण का विवरण

प्रस्तुत अध्ययन में बी. के. पासी एवं एम.एस. ललिथा द्वारा निर्मित शिक्षण कौशल मापनी का उपयोग किसा गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण का विवरण

क्रं.	उपकरण	निर्माणकर्ता	मापित दर
1	शिक्षण कौषल मापनी	बी. के. पासी एवं एम.एस. ललिथा	विद्यार्थीयों की षिक्षण कौषल

5. अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

सांख्यिकी एवं वैज्ञानिक विधि है जिसका अर्थ भिन्न-भिन्न निरीक्षणों एवं प्रयोगों के द्वारा प्राप्त प्रदत्तों (data) को एकत्र करना, उनका वर्णन करना, व्याख्या करना तथा वर्गीकरण करना होता है।

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन और टी-टेस्ट का प्रयोग किया गया है।

6. प्रदत्तों का वर्गीकरण एवं तालिकाकरण

वर्गीकरण के द्वारा अत्यव्यस्थित आकड़ो को व्यवस्थित रूप दिया जाता है वर्गीकरण वह क्रिया है ।

जिसके द्वारा संकलित सांख्यिकीय सामग्री को विभिन्न गुणों या विशेषताओं के आधार पर पृथक - पृथक वर्गो और उप- वर्गो में विभक्त किया जाता है। अतः वर्गीकरण के द्वारा आकड़ो की समानताओं को असमानताओं से अलग किया जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है ।

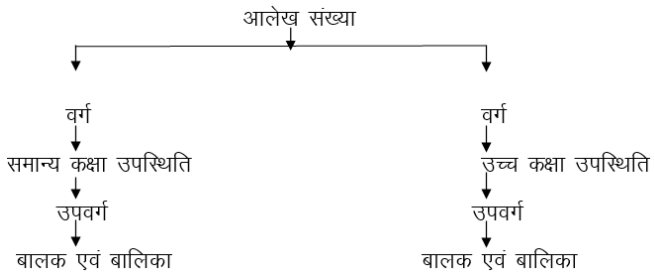

वर्गीकरण के पश्चात सांख्यिकी सामग्री को व्यवस्थित ढ़ग से प्रदर्षित किया जाता है। इसके लिये संमको का सारणीयन या तालिकाकरण किया जाता है, सारणीयन के द्वारा वर्गीकृत संमको को खाने एवं पत्तियों द्वारा प्रदर्षित किया गया है ।

7. परिकल्पनाओं का परीक्षण

H01 छात्राध्यापकों के कक्षा में उपस्थिति का उनके षिक्षण कौषल पर सार्थक प्रभाव नही पाया जाएगा।

सरणी क्र. - 1

कक्षा में उपस्थिति का उनके षिक्षण कौषल पर प्रभाव

क्र.सं.	श्रेणी	संख्या (N)	मध्यमान(M)	मनक विचलन(S.D.)	F- टेबल मान 0.05 पर	F- गणना मान	df	परिणाम
1	समान्य कक्षा उपस्थिति का षिक्षण कौषल	414	96.87	6.23	3.01	3.29	598	अस्वीकृत
2	उच्च कक्षा उपस्थिति का षिक्षण कौषल	186	116.54	8.04				

0.05 पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

आकृति क्रमांक 1

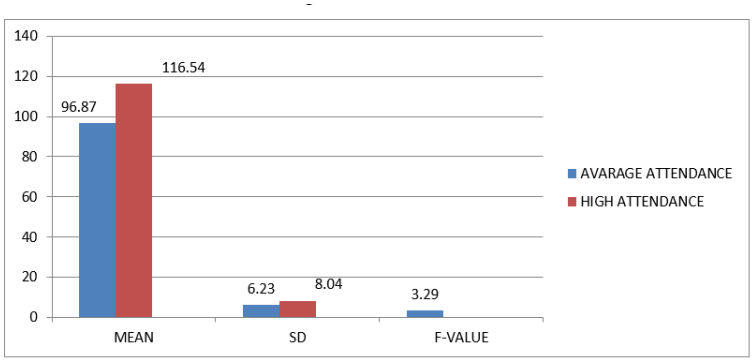

सारणी व आकृति के अनुसार छात्राध्यापकों के कक्षा में उपस्थिति का उनके षिक्षण कौषल पर प्रभाव में समान्य कक्षा उपस्थिति वाले छात्रों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 96.87 व 6.23, उच्च कक्षा उपस्थिति वाले छात्रों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 116.54 व 8.04 है। छात्राध्यापकों के कक्षा में उपस्थिति का उनके षिक्षण कौषल पर प्रभाव ज्ञात करने के लिए F परिक्षण का प्रयोग किया गया है। गणना के उपरांत F का मान 3.29 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रांस (df) 598 के लिए 0.05 स्तर पर थ् सारणी का मान 3.01 है। गणना द्वारा थ् का गणितीय मान, सारणी के F के मान से अधिक है। इसलिए 0.05 स्तर पर तीनो समूह में सार्थक प्रभाव पया गया। अतः शून्य परिकल्पना ''छात्राध्यापकों के कक्षा में उपस्थिति का उनके षिक्षण कौषल पर सार्थक प्रभाव पाया जाएगा।'' अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष कहा जा सकता है कि ''छात्राध्यापकों के कक्षा में उपस्थिति का उनके षिक्षण कौषल पर सार्थक प्रभाव पाया जाएगा।''

8. अध्ययन का निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधकार्य के अध्ययन द्वारा हम यह निष्कर्ष पर पहुंचते है कि छात्राध्यापकों के कक्षा में उपस्थिति का उनके षिक्षण कौषल पर सार्थक प्रभाव पाया जाएगा।

अतः शोध कार्य से स्पष्ट होता है कि जबसे छात्राध्यापकों के कम उपस्थिति के कारण उनके षिक्षण कौषल के विकास प्रभाव बढ़ गया है। जिससे सामान्य उपस्थिति वाले छात्राध्यापको का षिक्षण कौषल उच्च उपस्थिति वाले छात्राध्यापको से कम रहा है।

उदाहरण स्वरूपः कोरोना काल के बाद यू-ट्यूब और अन्य आनलाईन षिक्षण प्लेटफार्म पर तमाम अच्छे से अच्छे षिक्षको का अध्यापन कार्य से छात्राध्यापक घर बैठै- बैठे ज्ञान अर्जन कर सकते है किन्तु षिक्षण कौशल सीखने के लिए भौतिक कक्षा और वास्तविक अभ्यास की नितांत आवश्यकता होती है।

9. अध्ययन का शैक्षिक महत्व एव सुझाव

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिये जा रहे है जो बालकों के लिए शैक्षिक व सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है

- छात्राध्यापकों के कक्षा में भौतिक उपस्थिति एवं आनलाईन षिक्षण प्लेटफार्म दोनो के सामंजस्य से सीखा गया षिक्षण कौषल और भी प्रभावकारी हो सकता है।
- छात्राध्यापकों द्वारा सीखे गये प्रभावकारी षिक्षण कौषल से हम अपने देष की षिक्षा व्यवस्था को और बेहतर और प्रबल बना सकते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

भोजक, षिवनी (2022). ''षिक्षण प्रषिक्षण महाचिद्यालय में इंटर्नषिप की वस्तुस्थिति का समालोचनात्मक अध्ययन''।
लाल, आर.बी. (2012). ''भारतीय षिक्षा का इतिहास'' विकास एवं समस्याएँ, ''मेरठः आर.लाल बुक डिपो।
यादव, हरिष कुमार (2011). ''षूक्ष्म षिक्षण एवं षिक्षण कौषल'' पी.के. पब्लिषर दिल्ली।
शर्मा, आर.ए. (2009). ''षिक्षा अनुसंधान एवं सांख्यिकीय'' अन्तर्राष्ट्रीय पब्लिसिंग हाउस, मेरठ।
गोयल, राजीव (2009). ''षिक्षण कौषल'' स्पोट्स पब्लिकेष हाउस आगरा।
अग्रवाल, जे.सी. (2009).''षिक्षा मनोविज्ञान'' पहला संस्करण, षिक्षा पब्लिकेषन, दिल्ली पृ.
सं. 203-205
बेस्ट, जे.डब्ल्यू एण्ड कान जे (2003). ''रिसर्चइन एजूकषन'' (9 एडिसन) नई दिल्ली, पियर्सन प्रिटिंग हॉल ऑफ इंडिया।
कपिल, एस.के. (1984). ''अनुसंधान विधियों, ''हरिप्रसाद भार्गव, 41230 कचहरी घाट, आगरा-4
माथुर, एस.एस. (1977). ''षिक्षा मनोविज्ञान,''विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
shodhganga.com
www.ncert.com